मानव एकता दिवस गीत

तर्ज़: बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है, मेरा महबूब आया है .....

मानवता के मसीहा को, आओ मिलकर करें वंदन, आओ मिलकर करें वंदन,
हो मानव एकता सबमें, आओ मिलके करें सब प्रण, आओ मिलके करें सब प्रण.....

ना महज़ब की, ना जातों की, यहाँ कोई दीवारें हों,
दिलों में दूरियाँ ना हों, ना रिश्तों में दरारें हों,
ना कोई और बंधन हो, रहे बस प्यार का बंधन, रहे बस प्यार का बंधन
मानवता के मसीहा को आओ मिलकर करें वंदन, आओ मिलकर करें वंदन .....

जो दे गए सतगुरु बचन, ना भूलें हम वो क़ुरबानी,
वो शिक्षाएं दोहरानी हैं, हमे कर्मो की जुबानी,
चलें उस रास्ते पे हम, चले जिसपे थे गुरुबचन, चले जिसपे थे गुरुबचन
मानवता के मसीहा को, आओ मिलकर करें वंदन, आओ मिलकर करें वंदन
.....

किसीकी आँख ना हो नम, हो हर लब पे ही मुस्काने,
बाँटें खुशियाँ, और बाँटें गम, लगे ना कोई बेगाने,
ना शिकवे हों, ना तकरारें, हो चारों ओर मिलवर्तन, हो चारों ओर मिलवर्तन
मानवता के मसीहा को, आओ मिलकर करें वंदन, आओ मिलकर करें वंदन
.....

‘गोपी’ ‘दिलवर’, मांगे ‘भगवन’, कि गुरमत में ढले जीवन,
मिली जो दात, सतगुरु से, वो महकाए, हर घर आँगन,
मानवता मुस्कुराती रहे, यही तो है हमारा मिशन, यही तो है हमारा मिशन,
मानवता के मसीहा को, आओ मिलकर करें वंदन, आओ मिलकर करें वंदन .....
हो मानव एकता सबमें, आओ मिलके करें सब प्रण, आओ मिलके करें सब प्रण.....